

अन्तःकरण की व्याख्या

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,
पूर्व कुलपति, सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

मानव जीवन का लक्ष्य जन्म—मरण की श्रृंखला को तोड़कर अपने शुद्ध स्वरूप को प्राप्त करना है। अन्तःकरण के चार घटक हैं— एक भीतर का जगत है और दूसरा है बाहर का जगत। बाहर का जगत स्थूल और पंचेन्द्रियों का जगत है। भीतर का जगत सूक्ष्म है और अन्तःकरण से जुड़ा हुआ है। मन, वचन और काया रूपी शरीर पिछले जन्म के भुगतान के लिये है। कर्मोदय और प्रारब्ध के अनुकूल जीवन चलता है। जो चल रहा है उसके साथ हम जुड़े नहीं हैं। हमें राग—द्वेष से दूर रहना चाहिए। पूर्वजन्म में किये गये कर्म नष्ट हो जाने से मनुष्य मुक्त हो जाता है। अन्तःकरण का पहला तत्व है मन। मन चिन्तन करने से मन कहलाता है। चिन्तन करने से पूर्व मन नहीं रहता। मन को अमन करना चाहिए। मन पंचेन्द्रियों के माध्यम से विषयों को ग्रहण करता है और बुद्धि को प्रदान करता है। बुद्धि अच्छे—बुरे का विवेक करती है।

मन भूत, वर्तमान और भविष्य का चिंतन और नियोजन करता है। मन अनेक विकल्प देता है। बुद्धि उस पर विचार करके चुनाव करती है। चित्त चेतना की शक्ति है। स्थूल शरीर का मालिक चित्त है। आत्मा एक—एक कोशिका को चेतना प्रदान करती है। चेतन तत्व चित्त है। मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार अन्तःकरण के अवयव हैं। अहंकार के सिगनेचर से कोई भी वस्तु ग्रहण होती है। अहंकार सकारात्मक और नकारात्मक दोनों प्रकार का होता है। यह प्रतिष्ठित आत्मा है। यह जैसा भाव डालती है वैसा निर्माण होता है। अन्तःकरण ज्ञान के द्वारा शुद्ध होता है।

अन्तःकरण में शुद्धता का भाव रखने से अन्तःकरण शुद्ध हो जाता है। भीतर और बाहर के जगत् में अन्तर है। बाहर का जगत् बाह्य जगत् कहलाता है और अन्दर का जगत् अन्तःकरण कहलाता है। इन्द्रियां बाह्य जगत् का ज्ञान प्राप्त करती हैं। इन्द्रियां विषयों को मन तक पहुंचाती हैं। मन बुद्धि से संचालित है। बुद्धि विषय सामग्री को चेतना को देता है। चेतना से

सब प्रभावित होता है। चेतना में राग-द्वेष होता है। जहां राग-द्वेष है वहां अशुद्धि है। चौरासी लाख जीव योनियों में कर्म के कारण अशुद्धि अपने आप जुड़ जाती है। जब कार्मण शरीर आत्मा से संबंधित होता है तब राग-द्वेष की उत्पत्ति होती है। शरीर की कोशिकाओं को चेतना प्रदान करने वाली आत्मा है।

आत्मा की शक्ति से मन संचालित होता है। मन, बुद्धि, अहंकार और चित्त अन्तःकरण है। अन्तःकरण की समीक्षा का अर्थ है— अपने गुण दोषों का विचार करके, अन्तः समीक्षा करके सुधार करना। अन्तः समीक्षा से अन्तःकरण शुद्ध होता है। मानव गलती तब करता है, जब उसको गलती का ज्ञान नहीं होता। यदि क्या करणीय है? क्या अकरणीय है? इसका ज्ञान हो जाये तो सम्भवतः मनुष्य गलती न करें। इसके लिए प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है। हर वस्तु का प्रशिक्षण होता है। व्यक्ति जब बच्चा रहता है तो प्रत्येक चीज का उसको ज्ञान कराया जाता है और यह बताया जाता है कि उसे क्या करना है और क्या नहीं करना है। संस्कारों का बीज बचपन में ही किया जाता है। समय-समय पर उसका अन्तः निरीक्षण भी होना चाहिए। विकास की जो धारा प्रारम्भ की गई है, वह आगे बढ़ रही है या नहीं, उसमें क्या कमी है, उसको कैसे ठीक किया जाये, ये सब बातें अन्तः समीक्षा से ही ज्ञात होती है।

चिन्तन-मनन और निदिध्यासन करने से धीरे-धीरे ज्ञान स्थायी हो जाता है। चिन्तन का अर्थ है किसी विषय पर मन लगाकर उसके गुण दोषों पर विचार करना। मानव जीवन में अनेक विषय होते हैं, जिनके बारे में उसकी अच्छाई और बुराई के बारे में विचार किया जाता है और अच्छाई को ग्रहण किया जाता है। यह कार्य चिन्तन का है। मनन के द्वारा मानसिक चिन्तन होता है। विद्यार्थी जब किसी पाठ का स्मरण करता है तो उस पर वह मनन करता है। मनन करने से पाठ दिमाग में स्थित हो जाता है। जब बार-बार यह क्रिया की जाती है तो वह निदिध्यासन कहलाने लगती है। जीवन में सर्वत्र द्वैत का दर्शन होता है। द्वैत से अद्वैत की ओर जाने की प्रक्रिया पूर्णता की प्रक्रिया है। द्वैत साधन है और अद्वैत हमारा लक्ष्य। संसार में सर्वत्र दो छोर हैं— जीवन और मरण, स्त्री और पुरुष, जड़ और चेतन, द्वैत और अद्वैत।

जीवन एक स्वाभाविक प्रक्रिया है। जन्म के बाद व्यक्ति बड़ा होता है। उसका एक लक्ष्य होता है और लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए व्यक्ति प्रयास करता है। बार-बार के अभ्यास से लक्ष्य

की प्राप्ति हो जाती है। यदि किसी कारण से असफलता मिल रही है तो मानव को अन्तःसमीक्षा करनी चाहिए कि हमारे अन्दर क्या कमी रह गयी, जिससे हम अपने लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर पा रहे हैं। इस सम्बन्ध में चींटी का उदाहरण द्रष्टव्य है।

एक चींटी एक तिनका लेकर दीवाल पर चढ़ने का प्रयास कर रही थी। बार—बार वह दीवाल से नीचे गिर जाती थी, लेकिन उसने हार नहीं मानी और लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए प्रयास करती रही। वह समय आ गया जब वह दीवाल पर चढ़ गयी। मानव को भी इसी प्रकार बार—बार प्रयास करना चाहिए, जब तक लक्ष्य प्राप्त न हो जाये प्रयास करते रहना चाहिए। लक्ष्य सदैव ऊंचा बनाना चाहिए। ऊंचा लक्ष्य व्यक्ति को ऊंचा उठाता है।